'दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास' के सहायतार्थ आयोजित 'चाणक्य मंचन' के कार्यक्रम में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(स्वतंत्र वीर सावरकर ग्राऊण्ड, मलाद ईस्ट, मुंबई
दिनांक–20.11.2016, समय–अप॰ 6.30–8.30 बजे)

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास के सहायतार्थ आयोजित 'चाणक्य मंचन' के कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित मॉरीशस के माननीय प्रधानमंत्री श्री अनिरूद्ध जगन्नाथ जी, स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरि जी महाराज, श्री मनोज जोशी जी, श्री आशीष गौतम जी, कार्यक्रम संयोजक श्री मोहित कम्बोज जी, श्री प्रेम शुक्ला जी, मिशन के अन्य सभी पदाधिकारीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, भारत के प्रतिभावान युवाओं, देवियों एवं सज्जनों!!

'दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास' की गतिविधियों से मैं काफी पहले से अवगत हूँ। यह संस्था भारत में सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के कार्यों में निरंतर लगी रहती है तथा भारत की सामाजिक संस्कृति के विकास हेतु सतत् तत्पर रहती है। आज 'चाणक्य मंचन' कार्यक्रम का भव्य आयोजन भी इसी श्रृंखला की कड़ी में सम्पन्न हो रहा है। मैं इस संस्था को साधुवाद एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

मित्रों, आज का यह कार्यक्रम विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गया है। कार्यक्रम में मॉरीशस के माननीय प्रधानमंत्री श्री अनिरूद्ध जगन्नाथ जी पधारे हुए हैं। मॉरीशस के साथ भारत का रिश्ता ऐसा है, जिस पर हमें अत्यन्त गर्व है। उसमें भी मैं जिस राज्य का राज्यपाल हूँ, उस राज्य के साथ तो मॉरीशस का और करीबी रिश्ता है। बिहार की राजधानी पटना के हृदय–स्थल के रूप में विख्यात गाँधी मैदान में मॉरीशस के प्रथम प्रधानमंत्री डॉ॰ शिवसागर राम गुलाम जी की आदमकद प्रतिमा स्थापित है, जिसका अनावरण उनके

पुत्र एवं मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री नवीन राम गुलाम जी ने किया था।

आज सभी अवगत हैं कि मॉरीशस देश की ग्रामीण अंचलों की भाषा, वहाँ की संस्कृति, वहाँ के रीति–रिवाज, परम्पराएँ–सब कुछ हमारी भारतीय परम्पराओं से मिलते–जुलते हैं। बिहार में काफी लोकप्रिय भोजपुरी भाषा के विकास हेतु भी कई सांस्कृतिक–साहित्यिक संस्थाएँ मॉरीशस में संचालित होती हैं, और लेखकों–कवियों के सांस्कृतिक–दल के दौरे प्रायः दोनों देशों में होते रहते हैं। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि इतने सन्निकट के रिश्ते वाले देश, जहाँ के निवासियों के पूर्वजों ने हमारे ही देश से वहाँ जाकर अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बल पर अपनी पहचान बनाई और वहाँ राजनीतिक नेतृत्व तक प्रदान किया–उस देश के प्रधानमंत्री जी का आज हमारे बीच उपस्थित होना सचमुच हम सबका सौभाग्य है।

मित्रों, आज 'चाणक्य मंचन' के कार्यक्रम के माध्यम से आप विस्तार से और सूक्ष्मतापूर्वक चाणक्य के महान व्यक्तित्व के बारे में अवगत होंगे। परन्तु मैं भी चाणक्य के बारे में आपको चंद बातें निवेदित करना चाहता हूँ।

आप सभी अवगत है कि विष्णुगुप्त चाणक्य, एक असाधारण बालक थे। विष्णुगुप्त भी अपने पिता की तरह शिक्षक बनना चाहते थे। उन्होंने तक्षशिला विश्वविद्यालय में राजनीति और अर्थशास्त्र की शिक्षा ग्रहण की। इसके पूर्व वेद, पुराण इत्यादि वैदिक साहित्य का उन्होंने किशोरावस्था में ही अध्ययन कर लिया था।

उनकी कुशाग्र बुद्धि और तार्किकता से उनके साथी तथा शिक्षक भी प्रभावित थे, इसी कारण उन्हें 'कौटिल्य' भी कहा जाने

लगा। अध्ययन पूरा करने के बाद, तक्षशिला विश्वविद्यालय में ही चाणक्य अध्यापन करने लगे। इसी दौर में उत्तर भारत पर अनेक विदेशी आक्रमणकारियों की शोषण–दृष्टि पड़ी, जिसमें सेल्यूकस, सिकंदर आदि प्रमुख हैं। परन्तु, चाणक्य भारतवर्ष को एकीकृत देखना चाहते थे। अतः उन्होंने तक्षशिला में अध्यापन–कार्य छोड़ दिया और राष्ट्रसेवा का व्रत लेकर पाटलिपुत्र आ गए।

चाणक्य का जीवन कठोर धरातल पर अनेक विसंगतियों से जूझता हुआ आगे बढ़ा। कुछ लोग सोच सकते हैं कि उनका जीवन–दर्शन प्रतिशोध लेने की प्रेरणा देता है, लेकिन चाणक्य का प्रतिशोध निजी प्रतिशोध न होकर सार्वजनिक प्रतिशोध था। उन्होंने जनता के दुःख–दर्द को देखा और स्वयं भोगा था। उसी की फरियाद लेकर वे राजा से मिले थे। मगध के राजा घनानंद चूँकि प्रजा के हितैषी नहीं थे, इसलिए चाणक्य ने उन्हें खत्म करने का प्रण लिया। उन्होंने 'चाणक्य नीति' जैसा नीतियों का एक अनमोल खजाना दुनिया को दिया, जो जीवन के सभी क्षेत्रों में हमारा मार्गदर्शन करने की क्षमता रखता है।

मित्रों, चाणक्य का सपना था कि भारत राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से विश्व का सिरमौर बने। उनकी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में उनके सपनों के भारत के दर्शन किये जा सकते हैं। उनकी पुस्तकें–'नीतिशास्त्र' एवं 'चाणक्य नीति' में मौलिक विचारों की प्रखरता और नीतिमयता से प्रेरणा ग्रहण करते हुए अपने जीवन को सँवारा जा सकता है। बन्धुओं, चाणक्य के बारे में यह बात प्रसिद्ध है कि वे अपने उपयोग के लिए दो दीपक साथ में रखा करते थे। एक दीपक, जिसकी रोशनी में वे राज–काज का काम किया करते और एक दीपक जिसकी रोशनी में वे निजी कार्यों का

संपादन करते थे, उसमें तेल निजी राशि से डालते थे। सार्वजनिक जीवन में ऐसी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा –हमें चाणक्य के व्यक्तित्व में ही देखने को मिलती है। भ्रष्टाचार मुक्त सार्वजनिक जीवन का उदाहरण हमारे सामने चाणक्य ने अपने आचरण द्वारा रखा था।

चाणक्य एक आदर्श राजा में त्याग, सदाचरण, दृढ़निश्चयता, सत्यवादिता, प्रजा–वत्सलता आदि गुणों को आवश्यक मानते थे। उनका कहना था कि जिस राज्य का राजा धार्मिक और गुणी होगा, वहाँ की प्रजा भी धार्मिक और गुणी होगी। और यदि राजा पापी और विधर्मी होगा तो प्रजा भी राजा का अनुसरण कर विधर्मी हो जाएगी।

मित्रों, चाणक्य के इन अनमोल वचनों का अभिप्राय यही है कि समाज और राजनीति में जो नेतृत्वकर्त्ता हैं, उन्हें बराबर अपने सार्वजनिक जीवन में सदाचरण और त्याग के पथ का अनुसरण करना चाहिए।

मित्रों, आज हमने देश में अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण और आतंकवादी गतिविधियों के नियंत्रण हेतु, कालेधन के कुप्रभाव को रोकने के प्रयास तेज किये गये हैं। थोड़ी असुविधाओं को झेलते हुए भी हमें अगर किसी महान कार्य में सहयोग करने का सौभाग्य मिलता है, तो थोड़े कष्ट उठाने से परहेज नहीं करना चाहिए। चाणक्य का व्यक्तित्व और नीतियाँ इस बात का संदेश देती हैं कि सदाचरण और त्याग के पथ पर चलकर ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। आज आप जो 'चाणक्य मंचन' का कार्यक्रम देखेंगे, उससे आपको सबल, सुसंस्कृत और सशक्त भारतवर्ष के पुननिर्माण की प्रेरणा और ऊर्जा मिलेगी–ऐसा मेरा विश्वास है। मैं ऐसे सार्थक आयोजन के लिए 'दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास' से जुड़े श्री अशीष

गौतम जी, श्री प्रेम शुक्ला जी, श्री मोहित जी एवं श्री मनोज जोशी जी– सबको हृदय से धन्यवाद देता हूँ। मैं एक बार पुनः मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री अनिरूद्ध जगन्नाथ जी का भी हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

****

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।